कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें : www.cicr.org.in

अंक: 2 खंड: 6 जून 8–15, 2015

भा.कृ.अ.प – के.क.अ.सं. दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा विकसित एक नया बीटी - कपास इवेन्ट के अनुसंधान और विकास के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करता है ।

भा.कृ.अ.प – के.क.अ.सं., ने प्रोफेसर दीपक पेंटल एवं उनकी टीम द्वारा विकसित एक बीटी कपास इवेन्ट 'टी.जी.2 ई-13' के अनुसंधान एवं विकास और वाणिज्यिक उपयोग के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ, कृषिभवन, नई दिल्ली में दि.15 जून 2015 को एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू) पर हस्ताक्षर किया । बीटी - कपास ट्रांसजेनिक इवेन्ट 'टी.जी.2 ई-13' किस्म 'कोकर 310' में क्राई-1 ए.सी जीन शामिल करने के लिए विकसित किया गया । समझौता ज्ञापन डॉ. एस.अय्यप्पन, महानिदेशक, भा.कृ.अ.प, डॉ. जे.एस.संधु, उप महानिदेशक (वाणिज्यक विज्ञान), डॉ. गोपालकृष्णन, सहायक महानिदेशक (वाणि.फ.), डॉ.पी.के.चक्रबर्ती, सहायक महानिदेशक (पौधा संरक्षण), डॉ.टी.आर.शर्मा, निदेशक, एन.आर.सी.पी.बी, प्राध्यापक पी.के.बर्मा, डी.यू एवं अनुसंधान वैज्ञानिकों डॉ.अमर्जीत सिंग एवं डॉ.कुमार परितोश, डी.यू. के उपस्थिति में हस्ताक्षर किया गया ।

डॉ. अय्यप्पन, ने प्रोफेसर पेंटल और उनकी टीम को इस उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी और आश्वासन दिया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा भारत में प्रभावी कपास कीट प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी को आगे ले जाने के सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया जाएगा । महानिदेशक ने के.क.अ.सं., से प्रबोधित किया कि विविधीकरण और गूलर सूंडी के सहिष्णुता सहित सूखे सहिष्णु किस्मों के विकास के लिए इवेंट का उपयोग करें ताकि कपास की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने में शुष्क क्षेत्रों में किसानों की मदद कर सकते हैं । डॉ.संधु ने इस पहल का समर्थन किया और कहा कि किसानों के लिए सुरुचिपूर्ण और टिकाऊ तकनीकी विकल्पों प्रदान करने में सार्वजनिक क्षेत्र के इन प्रयासों को अधिक मजबूत करेगी । डॉ. पीके चक्रवर्ती ने कहा कि इस इवेन्ट की जैव सुरक्षा के परीक्षण के समन्वय इनके द्वारा होगा । प्रोफेसर दीपक पेन्टल ने सूचित किया कि बीटी - कपास इवेन्ट में अमेरिकी गूलर सूंडी *हेलिकोवार्पा अर्मीजेरा* के लिए उत्कृष्ट विषाक्तता के साथ उच्च स्तर के क्राई-1 एक्सप्रेशन हैं । उन्होंने कहा कि बीटी - कपास इवेन्ट टी-जी 2ई-13 जैव प्रौद्योगिकी विभाग के आर्थिक सहायता के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी विभाग द्वारा आठ वर्षों के कड़ी मेहनत के बाद विकसित किया गया था । उन्होंने सिफारिश सहित कहा कि, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – के.क.अ.सं., को अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों द्वारा विकसित अन्य ट्रांसजेनिक इवेन्ट के साथ टी-जी 2ई-13 इवेन्ट को ढेर लगाने का प्रयास करना चाहिए ताकि किस्मों के प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन सक्षम करने के लिए कीट नियंत्रण प्रभावकारिता और दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ाया जा सकता है । डॉ.क्रांति ने प्रोफेसर पेन्टल से 32 बीज के बीज पैकेट प्राप्त किया । उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में, सावधानीपूर्वक कड़ी मेहनत द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र की प्रणाली ने शुष्क भूमि और कम इनपुट स्थितियों हेतु अनुकूल उत्कृष्ट विश्ष्ट किस्मों को विकसित की है । हालांकि, बीटी के लिए किसान वरीयता का परिणाम सार्वजनिक क्षेत्र की किस्मों के तहत क्षेत्र में पतन हुई है । हाल ही में, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – के.क.अ.सं., नई उच्च घनत्व रोपण प्रणाली (एच.डी.पी.एस), विकसित की है जो खेती की कम लागत के साथ उच्च पैदावार प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से महाराष्ट्र और तेलंगाना के वर्षा सिंचित क्षेत्रों के किसानों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा था । डॉ.क्रांति ने कहा कि उत्कृष्ट किस्मों को बीटी - कपास के साथ परिवर्तित करने के लिए एवं टी-जी 2 ई-13 जो देश के अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों द्वारा विकसित ट्रांस जीन के साथ पिरामीड करने हेतु लिए गये एच.डी.पी.एस प्रणाली के वर्तमान पहलुओं को बेहद मजबूत बनाया जायेगा ।

जर्मप्लाज्म अन्वेषण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान (के.क.अ.सं.,), नागपुर द्वारा महाराष्ट्र के भंडारा और गोंदिया जिलों से देसी कपास/ बारहमासी पेड़ कपास की देशी किस्मों को इकट्ठा करने हेतु खोजपूर्ण सर्वेक्षण किया गया है । डॉ. एस.बी. नंदेश्वर, प्रधान, जैवप्रद्यौगिकी अनुभाग एवं प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. शरवणन, एम., वैज्ञानिक, कु. प्रगति, अनुसंधान सहायक एवं श्री.स्वप्निल, कुशल कामगार ने इस सर्वेक्षण में दि. 12.6.2015 को भाग लिया । अन्वेषण के दौरान, कपास जर्मप्लाज्म के 26 प्रकार महाराष्ट्र के भंडारा, गोरेगांव, आम्गॉव और गोंदिया से एकत्र किए गए थे ।

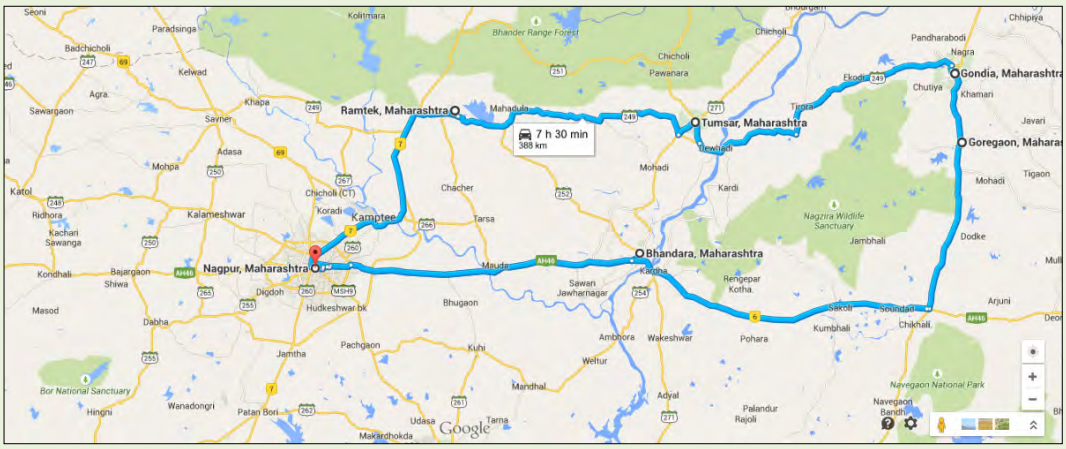

अन्वेषण का मार्ग नक्षा

भाषण और किसान का दौरा

के.क.अ.सं.,क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर में - "सांप, सांप के काटने, प्राथमिक चिकित्सा और संरक्षण" में भाषण आयोजित किया गया

भारत के ग्रीन क्रॉस से श्री. ए.सेल्वराजू ने "सांप, सांप के काटने, प्राथमिक चिकित्सा और सुरक्षा" पर राष्ट्रीय सर्प दंश पहल के तहत दि. 8 जून, 2015 को के.क.अ.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर में एक भाषण दिया । भाषण में अलग सांपों के प्रकार और जहरीला और गैर जहरीला पर उनकी पहचान के संबंध में बताए गये । उन्होंने सांप के काटने के समय प्रदान किया जाने का प्राथमिक चिकित्सा सांप के काटने का लक्षण; करना एवं न करने के संबंध में और प्राथमिक उपचार के दौरान न करने के मिथकों के बारे में विस्तार से चर्चा की । उन्होंने क्षेत्र में काम करते समय लिया जाने के सावधानियां पर भी प्रकाश डाला । के.क.अ.सं., के सभी कर्मचारियों मे इसमें भाग लिया ।

एटीएमए के तहत के.क.अ.सं., कोयंबटूर में किसानों के ज्ञात पाने की यात्रा

तमिलनाडु के इरोड जिले के अंदियूर ब्लॉक से पच्चीस कपास किसानों, बी.टी.टी के संयोजक के साथ हाल ही में केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयम्बटूर का एटी.एम.ए के तहत ज्ञात पाने के दौरे पर थे । कपास में उन्नत किस्मों और संकर, बेहतर कपास उत्पादन प्रौद्योगिकियों, अंतर फसल द्वारा आय और कपास उत्पादन बढ़ाने में के.क.अ.सं., की भूमिका के संबंध में डॉ. एस उषा रानी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) ने किसानों को अवगत कराया । कपास में कीट प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी डॉ. एम अमुथा, वैज्ञानिक (कृषि - कीटविज्ञान) द्वारा दी गयी ।

कार्यशाला / सम्मेलन / प्रशिक्षण में भाग लेना

- के.क.अ.सं., क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबत्तूर के सभी वैज्ञानिकों ने दि. 12 जून, 2015 को गन्ना प्रजनन संस्थान के सभागार में आयोजित जे. गेट सी.ई.आर.ए. (कृषि में ई-संसाधनों के सहायता संघ) का एक दिवसीय कार्यशाला इंटरएक्टिव में भाग लिया । डॉ रामेश्वर सिंह, परियोजना निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद –डी.के.एम.ए, नई दिल्ली ने कार्यशाला का उद्घाटन किया । कार्यशाला निदेशक, गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर के पहल पर सूचना विज्ञान इंडिया लिमिटेड, बैंगलोर द्वारा प्रायोजित किया गया था । सी.ई.आर.ए के साथ जुड़े हुए कुछ प्रकाशकों ने भी इसमें भाग लिया ।

- डॉ. अ.हि.प्रकाश, परियोजना समन्वयक (कपास सुधार) एवं अध्यक्ष, के.क.अ.सं., क्षे.कें., कोयंबटूर, ने तमिलनाडु में कपास परिदृश्य पर और सार्वजनिक क्षेत्र से सामना करना पड़ा प्रजनन कार्यक्रम के चुनौतियों पर दि. 12 जून, 2015 को तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित **'81 वें वैज्ञानिक श्रमिक सम्मेलन'** के दौरान विशेष भाषण दिया । उद्घाटन समारोह श्री टी राजेश लकोनी आईएएस कृषि उत्पादन आयुक्त एवं सरकार के सचिव, कृषि विभाग, चेन्नई की अध्यक्षता में किया गया ।

- डॉ. एस.मामिक्कम, प्रमुख वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) ने नियामक अनुपालन के लिए सीमित क्षेत्र परीक्षण की निगरानी पर यू.एन.ई.एफ-जी.ई.एफ द्वारा समर्थित "जैव सुरक्षा पर द्वितीय अवस्था क्षमता निर्माण परियोजना", के एक भाग के रूप में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन के मंत्रालय (एम.ओ.ई.एफ. एवं सी.सी) द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा कार्यशाला में नास परिसर, न्यू दिल्ली में हाल ही में प्रशिक्षण लिया । प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण जोखिम मूल्यांकन के लिए केंद्र (सी.ई.आर.ए.) – आय.एल.एस.आय., वाशिंगटन से अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ द्वारा आयोजित प्रस्तुतियों और ग्रूप अभ्यास शामिल थे ।

बैठकों

- डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, भा.कृ.अ.प – के.क.अ.सं., नागपुर ने महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंदान परिषद के द्वारा आयोजित "ट्रान्सजेनीक कपास" पर दि. 15.6.2015 को भाग लिया ।

- प्राथमिकता निर्धारित करना, निगरानी और मूल्यांकन समिति (पी.एम.ई.) की बैठक वर्ष 2015 के खरीफ के दौरान किया जाना बुवाई योजना, प्रयोगात्मक विवरण और विभिन्न प्रयोगों के लिए क्षेत्र के आवंटन पर चर्चा करने के लिए दि. 09.06.15 से दि.11.06.15 तक के.क.अ.सं., नागपुर में सभी तीन विभागों के लिए आयोजित की गयी है ।

- "वर्ष 2004 के बीज बिल के कार्यान्वयन के लिए तैयारी" पर एक बैठक उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) भा.कृ.अ.प की अध्यक्षता में हाल ही में नई दिल्ली के एन.बी.पी.जी.आर, न्यू दिल्ली में आयोजित की गयी । डॉ. अ.हि.प्रकाश ने बैठक में भाग लिया एवं मुद्दों जैसे देश में उपलब्ध फसलों की फसल के लिहाज से किस्मों के बारे में जानकारी का संग्रह, विस्तृत आवश्यकता एवं विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन के लिए प्रक्रियाओं का विकास, किस्मों के बहु-स्थानीय परीक्षणों के मूल्यांकन, राष्ट्रीय पंजीयक को किस्मों के विशेषताओं का अभिलेखबद्ध करना, बहु-स्थानीय परीक्षणों के आयोजन के लिए संगठनों का प्रत्यायन के अनिवार्यताएँ / आवश्यकताओं, किस्मों के निष्पादन के परीक्षण के लिए फसल के लिहाज से प्रोटोकॉल का विकास, आदि पर चर्चा की गई ।

निर्मित एवं प्रकाशित:	डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक:	डॉ. एस. एम. वास्निक
संपादकों:	डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम. शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन:	डॉ. एम. सबेष एवं श्री. एस. सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद:	श्रीमति. के. सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

प्रमाण: कपास नई खोज, अंक – **2**, खंड – **6, 2015**, भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है ।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com